P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-5* ISSUE-10* January- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

वैष्णव पांचरात्र आगम–परम्परा एवं चौंसठभुजी नृसिंह प्रतिमा

Vaishnav Pancharatra Agam-Tradition and Chainsathbhu Ji Narsingh Image

Paper Submission: 15/01/2021, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

ध्यानेन्द्र नारायण दूबे
सहयुक्त आचार्य,
प्राचीन इतिहास, पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर, उ०प्र०, भारत

सारांश

विष्णु के चतुर्थ अवतार नृसिंह या नरसिंह के दो भुजी से लेकर चौंसठ भुजी प्रतिमाएं बनाई गई है। वस्तुतः वैष्णव पांचरात्र शास्त्र इस बात के साक्षी हैं कि वैष्णव धर्म भी तांत्रिक विचारों से अछूता नहीं रह पाया और उसी परम्परा में वैष्णागम ग्रन्थों की रचना हुई। खजुराहो संग्रहालय में संरक्षित नरसिंह की चौंसठ भुजी प्रतिमा भी वैष्णागम परम्परा में बनाई गई है जिसका शास्त्रीय आधार नृसिंह पूर्व तापनीय उपनिषद् है। ये उपनिषद् आथर्वण परम्परा और पांचरात्र धारा के हैं। इनमें वर्णित नृसिंह बीज मंत्र के आधार पर ही नरसिंह की चौंसठ भुजी प्रतिमा बनाई गई जो वैष्णव परम्परा की आभिचारिक प्रतिमा रही होगी।

From the two arms of the fourth incarnation of Vishnu, Narsingh or Narasimha, the Chantha Bhuji image have been made. In fact, the Vaishnava Pancharatra scriptures testify that even Vaishnavism could not remain untouched by Tantric ideas and in the same tradition Vaishnagam texts were composed. The Chanth Bhuji image of Narasimha preserved in the Khajuraho Museum is also built in the Vaishnagam tradition, with the classical foundation being the Narsingh pre-temperate Upanishads. These Upanishads belong to the Atharvan tradition and the Pancharatra stream. The Chantha Bhuji image of Narasimha was built on the basis of the Narasimha Beej Mantra mentioned in it, which must have been an idol of Vaishnava tradition.

मुख्य शब्द : मातृका, चतुष्षष्टि भुजी, विदारित उदर, नृसिंह पूर्व तापनीय, वैशिष्ट, सर्वतो मुख, भद्र, अनुष्टुभ, अमृतत्त्व, उग्र, भास्वर, अर्यमा, मुमुक्ष, अष्टौवसवाः, अन्तकः।

Matruka, Chatushtashi Bhuji, Vidarit Udar, Narsingh pre-temperate, Vaishtha, Sarvasto Mukha, Bhadra, Anushtubha, Amritattva, Ugran, Bhasvara, Aryama, Mumuksh, Ashtauvasvaah, Antakah.

प्रस्तावना

नृसिंह–प्रतिमाओं के अर्चाशास्त्रीय अध्ययन के प्रसंग में आगम परम्परा का अध्ययन अत्यन्त उपयोगी रहा है। सर्वाधिक उल्लेखनीय है खजुराहो की चौंसठ–भुजी नरसिंह की खण्डित प्रतिमा। डॉ० उर्मिला अग्रवाल ने भ्रमवश इसे विष्णु का विकराल रूप मान लिया था, जबकि यह प्रतिमा विष्णु के अवतार नृसिंह का विकराल रूप है। डॉ० रामाश्रय अवस्थी ने इस नरसिंह मूर्ति को पहचाना पर उनकी दृष्टि में उपलब्ध किसी शास्त्र में इतनी भुजाओं से युक्त नरसिंह प्रतिमा का विवरण नहीं मिलता। इन भुजाओं के चित्रण का आधार पुराणों का वह प्रसंग हो सकता है, जहाँ कहा गया है कि नरसिंह के चारो ओर फैली हुई सैकड़ो भुजाएँ थीं जिनके नख आयुध का काम देते थे (खजुराहो की देव–प्रतिमाएँ, पृ० १०३)। यह सत्य है कि पुराणों–आगमों में नृसिंह को 'विराट्' का प्रतिरूप माना है। इस प्रतिमा में 'सहस्र' (अगणित) की व्यंजना के बजाय नृसिंह के किसी विशिष्ट 'आगम–व्यक्तित्व' की झलक मिलती है, हमारी दृष्टि में चौंसठ हाथों का मतलब है अधिकतम ३२ व्यक्ति। नृसिंह भगवान् विष्णु का एक अवतार मात्र हैं लेकिन पुराणों मेंऔर आगमों में ऐसे अनेक संदर्भ हैं जो नृसिंह को विष्णुस्वरूप अथवा उनसे भी श्रेष्ठतर प्रमाणित करते हैं भले ही इस रूप का

अर्चाशास्त्रीय नाम न हो। संभव है कि आगम परम्परा की कोई मातृका (पाण्डुलिपि) कहीं पड़ी हो। जिसमें इस विलक्षण मूर्ति–शिल्प की तरह विलक्षण नाम निर्दिष्ट हो। संभावना यही है कि नृसिंह के उग्रवीरादि एकादश पदों के बत्तीस अदृश्य अंशावतार दृष्टि हैं चतुष्षष्टि–भुजी नरसिंह प्रतिमा में। इस प्रतिमा का निर्माण भी सप्रयोजन हुआ होगा। डॉ० अवस्थी की इस संभावना में बल है कि ''वराह अवतार के मंदिर के समान वहाँ (खजुराहो में) नरसिंह अवतार का भी एक मंदिर रहा हो और यह मूर्ति उसमें प्रतिष्ठित रही हो।''

उपलब्ध विवरण के आधार पर इस विलक्षण प्रतिमा का कोई शास्त्रीय आधार ज्ञात नहीं है। खजुराहो की देव–प्रतिमाओं के विवेचनकर्ता डॉ० रामाश्रय अवस्थी के अनुसार, ''इसमें अतिभंग खड़े नरसिंह अपने एक बायें हाथ से हिरण्यकशिपु की बायीं भुजा पकड़े प्रदर्शित है। शेष सब हाथ खण्डित अवस्था में है। हिरण्यकशिपु उनकी बायीं जंघा पर पड़ा है। उनकी प्रतिमा भी खण्डित है, किन्तु उसका विदारित उदर और उससे बहते रूधिर का चित्रण अभी भी द्रष्टव्य है। देव–दैत्य दोनों सामान्य आभूषणों से अलंकृत हैं। पादपीठ पर नृसिंह के दाहिनी ओर चार असुरों का चित्रण है। एक खड्ग से और दूसरा शक्ति से नृसिंह पर प्रहार करने को उद्यत है और दो खण्डित हैं जिनमें एक हताहत–सा लुढ़का पड़ा है। बायीं ओर भी आक्रमण करते हुए कई असुर हैं जिनमें एक की प्रतिमा अपेक्षाकृत बड़ीहै। नरसिंह का मस्तक टूट गया है किन्तु उसके दोनों ओर बनी रथिकाओं में बैठे ब्रह्माऔर शिव दर्शनीय हैं। मस्तक के ठीक ऊपर विष्णु–प्रतिमा युक्त एक रथिका रही है, जो अब टूट गयी है।[1] (चित्र संख्या–१)

अध्ययन के उद्देश्य

वस्तुतः चौंसठ भुजी नरसिंह प्रतिमा के निर्माण स्वरूप की पहचान करना इस शोध पत्र का मूल उद्देश्य है। डॉ0 उर्मिला अग्रवाल, डॉ0 रामाश्रय अवस्थी, देवांगना देसाई, क्रमिस स्टेला ने खजुराहो की मूर्तियों का अध्ययन करते हुए चौसठ भुजी निर्मित नृसिंह प्रतिमा की पहचान नहीं कर पाई थी। डॉ0 उर्मिला अग्रवाल ने इसे विष्णु का विकराल रूप माना था। डॉ0 अवस्थी ने इसे पहचाना और इसे नरसिंह की मूर्ति बतलाया। लेकिन उनकी दृष्टि में इस विकराल प्रतिमा के निर्माण का शास्त्रीय आधार नहीं था। वस्तुतः यह प्रतिमा वैष्णव परम्परा के नृसिंह पूर्व तापनीय उपनिषद् मे वर्णित सर्ग–सिद्धान्त के आधार को मूर्त रूप में प्रस्तुत किया गया है।

साहित्यावलोकन

डॉ0 देवागना देसाई ने खजुराहो, डॉ0 रामाश्रय अवस्थी ने खजुराहो की देव प्रतिमायें, डॉ0 रत्ना सिंह ने खजुराहों की मूर्तियां जैसी कृतियों में इस प्रतिमा का जिक्र किया है। डॉ0 उर्मिला अग्रवाल ने इस मूर्ति को विष्णु का विकराल रूप कहा है। प्रो0 अवस्थी ने इसकी पहचान की है लेकिन उनकी दृष्टि में कोई ऐसा शास्त्र नहीं है जिसके आधार पर इस विकराल नरसिंह मूर्ति का निर्माण किया गया। इस शोध पत्र में वैष्णव पांञ्चरात्र परम्परा में रचित नृसिंह पूर्व एवं उत्तर तापनीय उपनिषद के सर्ग सिद्धान्त को उद्घाटित किया गया है जिसके आधार पर इस मूर्ति को निर्मित किया है। नृसिंह पूर्व तापनीय उपनिषद् भी अथर्वण परम्परा का ग्रन्थ है।

ज्ञातव्य है कि नृसिंह तापनीय नामक दो उपनिषद् उत्तरकालीन उपनिषदों की श्रृंखला में आते हैं, यह वैष्णव उपनिषदों में एक श्रेष्ट स्थान रखने वाला कृतित्व है तथा नृसिंह सम्प्रदाय के अधिष्ठाता के रहस्यमय यथार्थ की सम्यक् मीमांसा करता है। नृसिंह पूर्व तापनीय उपनिषद् पर स्वामी शंकराचार्य का भाष्य भी उपलब्ध है तथा नृसिंह उत्तर तापनीय उपनिषद् पर अन्य मनीषियों के भाष्य भी प्राप्त होते हैं, ये दोनों रचनाएँ शंकराचार्य की पूर्ववर्ती तो हैं ही ऐसा प्रतीत होता है कि इसकी रचना छठवीं शताब्दी के आस–पास अवश्य हो चुकी होगी।[2] ध्यातव्य है कि नृसिंह देव का अवतारस्वरूप शिल्प–परम्परा में भी लगभग छठवीं शताब्दी ई० तक प्रतिष्ठित हो चुका था। इसके अतिरिक्त नृसिंहावतार की उपासना गुप्तकालीन धर्म का एक वैशिष्ट्य है। शिल्प, कला और मौद्रिक साक्ष्य दोनों ही इस तथ्य की पुष्टि करते हैं। .

नृसिंह तापनीय उपनिषद् 'आथर्वण परम्परा' से सम्बद्ध है। इसके अन्तर्गत चार परिच्छेद 'उपनिषद्' तथा आठ छोटे–छोटे अध्याय मिलते हैं। नृसिंह उत्तर तापनीय उपनिषद् खण्डों में विभक्त है, इसके कुल नौ खण्ड है।[3]

नृसिंह पूर्वतापनीय उपनिषद् के आरंभ में ही सर्ग–सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए मंत्र राजनारासिंहानुष्टुभ को सृष्टि का मूल कारण बताया गया है और सृजन धर्म के लिए उसकी महिमा गायी है, अनन्तर दूसरे उपनिषद् में एकादश स्थानों से युक्त मंत्रराज अनुष्टुभ को ही सर्वसूत्र माना गया है तथा निर्दिष्ट है कि जो इन्हें जानता है वही अमृतत्व की प्राप्ति करता है। वे एकादश पद यथास्थान क्रम इस प्रकार हैं।[4]

1.	प्रथम स्थान	उग्र
2.	द्वितीय स्थान	वीर
3.	तृतीय स्थान	महाविष्णु
4.	चतुर्थ स्थान	ज्वलंत
5.	पञ्चम स्थान	सर्वतोमुख
6.	षष्ट स्थान	नृसिंह
7.	सप्तम स्थान	भीषण
8.	अष्टम स्थान	भद्र
9.	नवम् स्थान	मृत्यु–मृत्यु
10.	दशम स्थान	नमामि
11.	एकादश स्थान	अहं

अगले मंत्रों में उग्र आदि की व्याख्या की गयी है, तद्नुसार उग्र इसलिए कहा गया है क्योंकि नृसिंहदेव इस रूप में अपनी महिमा से सभी लोकों, सभी देवताओं, सभी आत्माओं और सभी जीवों का सृजन, पालन और विसर्जन करता है। वह नरसिंह रूप में पूज्य हैं।

वीर इसलिए कहा गया है कि वह सबका विराम करता है, सबको विश्रान्ति प्रदान करता है, अपने वीर कर्म के कारण वह देव काम कहलाता है। जो समस्त लोकों में व्याप्त है, जिसके परे कुछ भी नहीं है वह महाविष्णु कहलाता है। जो सबको अपने तेज से भास्वर करता है, प्रकाशित करता है वह प्रज्ज्वलित सहित ज्वलंत कहलाता है।

जिसकी कृपा से अतीन्द्रिय भी सर्वत्र दृष्टि प्राप्त करता है, देखता है, सुनता है और चल सकता है वही सर्वतोमुख है। इसे नृसिंह इसलिए कहते हैं क्योंकि समस्त प्राणियों में वह वीरतम, श्रेष्ठतम है। परमेश्वर ने जगत् के कल्याण के लिए नृसिंह रूप धारण किया। वह समस्त भुवनों का अतिक्रमण करने वाला है।

जिसका रूप देखकर सभी देवता और जीव भाग जाते हैं तथा स्वयं जो किसी से नहीं डरता, जिसके भय से पवन चलता है, सूर्योदय होता है, इंद्र, अग्नि और मृत्यु संचरणशील हैं, उस एक देवता को भीषण कहा गया है। जो सबका कल्याण करता है उसको भद्र कहा गया है। अपनी महिमा से जो अपने भक्तजनों की मृत्यु–अपमृत्यु का मारण करता है और जिसे संसार आत्मदान और बल प्रदान करने वाले देवता के रूप में उपासना करता है उसे मृत्यु–मृत्यु संज्ञा प्राप्त है। सभी देवगण, मुमुक्षु और ब्रह्मवादी नमन करते हैं, जिसके लिए ब्रह्मर्स्पति उच्चारण करते हैं, इन्द्र, वरुण, मित्र, अर्यमा आदि देवता जिसकी स्तुति करते हैं, वह नमामि कहलाता है। उसे अहं कहा गया। इस रूप में वह सकल लोक का वाचक है, वही परमात्मा प्रकाश है।[5]

इस उपनिषद् के अगले मंत्रों में मंत्रराज नारसिंह के शक्ति मंत्र और बीज मंत्र का उद्घाटन है तद्नुसार कहा गया है कि माया ही इसकी नारसिंही है–''माया वा एषा – नारसिंही'' तथा आकाश ही बीज तत्त्व है।[6] मंत्रराज नारसिंह के अंग–मंत्र त्रिविध रूप सेवर्णित हैं, प्रणव मंत्र (ओंकार) लक्ष्मी गायत्री और नृसिंह गायत्री।[7] नृसिंह देव इन मंत्रों से प्रसन्न होते हैं। इसका यहाँ विस्तार से निरूपण है। एतदर्थ कुल बत्तीस अक्षर हैं और प्रत्येक अक्षर इस देवता के विविध रूप को लक्षित करता है– वे बत्तीस अक्षर–ब्रह्म यथा–क्रम इस प्रकार हैं, वे सभी नरसिंह देव के अंशभूत[8] है–

वर्ण	देवता
1. उं ओ नृसिंह देवो ब्रह्मा तस्मै वै नमो नमःभगवान्यश्च	
2. ग्रं	विष्णु
3. वीं	महेश्वर
4. र	पुरूष
5. मं	ईश्वर
6. हां	सरस्वती
7. विं	श्री
8. ष्णु	गौरी
9. ज्वं	प्रकृति
10. लं	विद्या
11. तं	ओंकार
12. सं	चतस्रोऽर्धमांत्रा
13. वं	वेदाः साऽगा सशाखास्त
14. तों	पंचाग्रयस्त
15. मुं	सप्तव्याहृतया
16. खं	अष्टौलोकपालः
17. नृं	अष्टौवसवा
18. सिं	रूद्राः
19. हं	आदित्याः
20. भिं	अष्टौग्रहाः
21. षं	पंचभूतानि
22. णं	कालः
23. भं	मनु
24. द्रं	मृत्यु
25. मृं	यमः
26. त्युं	अन्तकः
27. मृं	प्राणः
28. त्युं	सूर्यः
29. नं	सोमः
30. मां	विराट पुरूषः
31. म्यां	जीवः
32. हं	सर्वः

निष्कर्ष

नृसिंहोपासना की आगम–परम्परा के अध्ययन के आधार पर ज्ञात होता है कि नृसिंह के एकादश पदों में कुल बत्तीस अक्षर, वर्णचक्र सिद्धान्त की भाषा में वस्तुतः बत्तीस अक्षर–ब्रह्म उपलक्षित होते हैं। अस्तु खजुराहो की चौंसठ हाथोंवाली नृसिंह भगवान् की यह विलक्षण प्रतिमा उसी विलक्षण अक्षर–ब्रह्म की प्रतिरूप प्रतिमा कही जा सकती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *खजुराहो की देव प्रतिमाएँ, पृ० १०३*
2. *सुधाकर चट्टोपाध्याय : इवोल्यूशन ऑफ हिन्दू सेक्ट्स, पृ० ६३*
3. *(अ) स्पूनर, डी०वी०, एक्सवेशन एट बसाढ़–ए०एस०आई०ए०आर० १६१३–१४, पृ०– १३३*
4. *कुमार स्वामी, ए०के०, हिस्ट्री ऑफ इंडियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट फलक– १७*
5. *(स) बाजपेई, कृष्णदत्त, सागर थ्रू दी एजेज, पृ० ३६–३७, प्लेट ५*
6. *(द) देसाई, एस०, आइकनोग्राफी ऑफ विष्णु, पृ० ८७, चित्र ६७*
7. *(क) डेनिएलाऊ, ए०, हिन्दू पोलिथिज्म, प्लेट–प्प*
8. *(ख) अग्निपुराण, ४६.४*
9. *(ग) बनर्जी, आर०डी०, ईस्टर्न इंडियन स्कूल ऑफ मेडिएवल स्कल्पचर, प्लेट ग्स्टप्ष्*
10. *(घ) भट्टशाली, एन०के०, आइकनोग्राफी ऑफ बुद्धिष्ट एण्ड ब्रह्मानिकल स्कल्पचर्स इन द ढाका म्यूजियम वाल्युम ग्ग्टप्.ठ*
11. *(च) शिल्प रत्न उत्तर भाग, अध्याय २३.८*
12. *(छ) गोपीनाथ राव, ई०एच०आई०, भाग १, खण्ड–१, पृ० १५१–१५८*
13. *(ज) दवे, के०वी० गुजरालु, मूर्ति विधान, प्लेट–१७*
।।२।। तस्य हवा उग्र प्रथमं स्थानं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति, वीरं द्वितीयं स्थानं महाविष्णुं तृतीय ज्वलन्तं चतुर्थ सर्वतोमुखं पंचमं नृसिंह षष्ठं भीषण सप्तमं भद्रमष्टमं मृत्यु–मृत्यु नवमं नमामि दशममहमित्येकादशं स्थानं जानीयाद्यो जानीते

सोऽमृतत्वं च गच्छति। एकादशपदा वा अनुष्टुब्भवत्यनुष्टुभा सर्वमिदं सृष्टमनुष्टुभा सर्वमुपसंहृतं तस्मात्सर्वमिदमानुष्टुभं जानीयाद्यो जानीते सोऽमृतत्वं च गच्छति। नृसिंह पूर्वतापनीय उपनिषद्, २.३

14. *नृसिंह पूर्वतापनीय उपनिषद्, ३.१*
15. *वही*
16. *वही*
17. *वही*
18. *वही*

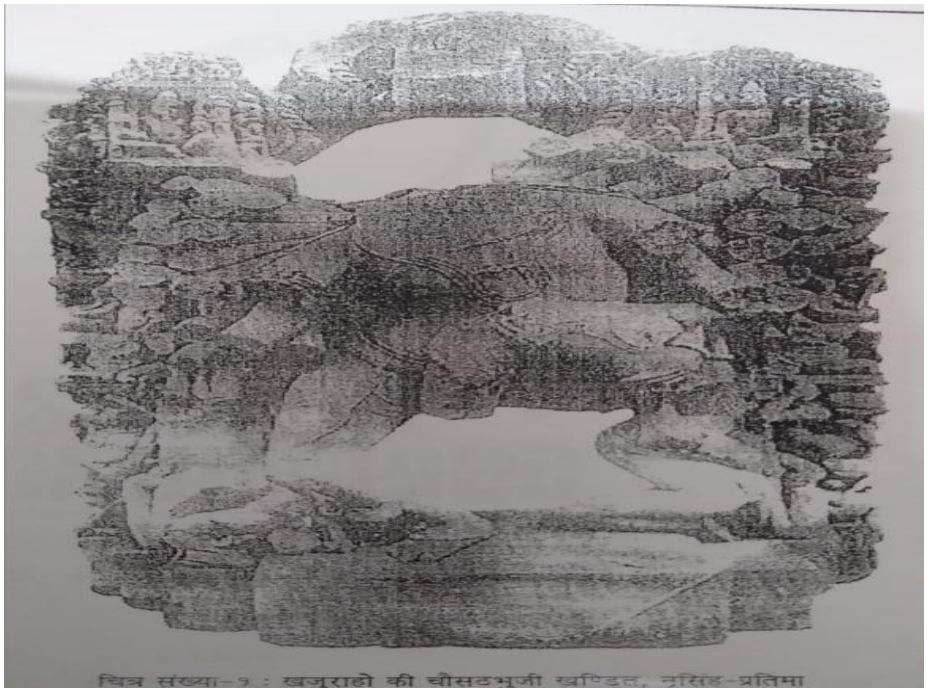

चित्र संख्या–२ : खजुराहो की चौसठभुजी खण्डित, नृसिंह-प्रतिमा